

मजदूर एकता लहर



हिन्दोस्तान की कम्युनिस्ट ग़दर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का अख़बार



ग़ंथ-36, अंक - 21

नवंबर 1-15, 2022

पाश्चिम अख़बार

कुल पृष्ठ-6

एक पैशाचिक अपराध की 38वीं बरसी पर :

1984 के जनसंहार के सबक

1984 में हुए सिखों के भीषण जनसंहार की 38वीं बरसी 1 नवंबर को है। तीन दिनों तक, बड़े सुनियोजित तरीके से जनसंहार किया गया था जिसमें, उस समय केंद्र सरकार में बैठी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेताओं ने उन हमलों की अगुवाई की थी। दिल्ली, कानपुर, बोकारो और कई अन्य शहरों की सड़कें बेरहमी से मारे गए सिखों की लाशों से भर गई थीं। यह अनुमान लगाया गया है कि उन तीन दिनों में 10,000 से अधिक लोग मारे गए थे। (बॉक्स देखें)

अंतरिम प्रधानमंत्री राजीव गांधी के पास पीड़ितों के लिए सहानुभूति के कोई शब्द नहीं थे। उन्होंने जनसंहार की बिलकुल भी निंदा नहीं की। इसके विपरीत, उन्होंने जनसंहार को यह कहकर उचित ठहराया कि "जब एक बड़ा पेड़ गिरता है, तो धरती हिल जाती है"। इस तरह, सिखों के जनसंहार को 'प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या की प्रतिक्रिया' बताकर उसे जायज़ ठहराया गया था। साथ ही साथ, जनसंहार के पीछे कांग्रेस पार्टी और उसकी सरकार के हाथ को छुपाया गया था और अपराध के लिए लोगों को दोषी ठहराया गया था।

पिछले 38 वर्षों से, जो भी सरकार आई है वह इसी झूठ को दोहराती रही है कि 1 से 3 नवंबर 1984 के दौरान जो घटनाएं हुयी थीं, वे "सिख-विरोधी दंगे" थे। "दंगा" शब्द का मतलब है लोगों का स्वतः स्फूर्त भड़क जाना। दूसरे शब्दों में, उस जनसंहार के लिए हिन्दोस्तान के लोगों को दोषी ठहराया जाता है।

जनसंहार को उस समय केंद्र सरकार में बैठी कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित किया गया था और अंजाम दिया गया था। पूरे राज्य तंत्र ने उसे अंजाम देने के लिए सक्रिय रूप से काम किया था।

1 नवंबर की सुबह से ही, सेवानिवृत्त और सम्मानित जनरलों और एयर मार्शलों, न्यायाधीशों और भारतीय विदेश विभाग

गई। तीन दिनों और तीन रातों तक पुलिस ने हमलों को चलते रहने दिया और कई जगहों पर पुलिस ने सक्रियता के साथ कातिलाना गुंडों की मदद की।

38 साल से लोग यह मांग कर रहे हैं कि सरकार 1984 के जनसंहार के पीछे की सच्चाई को सामने लाये। लोग मांग कर रहे हैं कि जनसंहार को आयोजित करने वालों को सज़ा दी जाए। लोग जानना चाहते हैं कि जनसंहार से पहले के हफ्तों और महीनों में और उन तीन दिनों और रातों के दौरान, सत्ता के गलियारों में क्या हो रहा था। केंद्रीय मंत्रिमंडल व गृह मंत्रालय में उस पर क्या चर्चा हुई और खुफिया एजेंसियों की उसमें क्या भूमिका रही?

उसके बाद जो-जो सरकारें बनी हैं, उन्होंने उस घटना पर कई जांच आयोगों का गठन किया है। उन सभी आयोगों ने जनसंहार को आयोजित करने में केंद्र सरकार, गृह मंत्रालय और राज्य के विभिन्न अंगों की भूमिका पर पर्दा डालने का काम किया है।

31 अक्टूबर, 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के 38

कांग्रेस पार्टी और उस समय सत्ता के प्रमुख पदों पर बैठे हुए अधिकारियों ने इस जनसंहार को अंजाम दिया था, लेकिन जनसंहार को सम्पूर्ण हुक्मरान वर्ग के हितों के लिए आयोजित किया गया था। हुक्मरान वर्ग ने अपने बीच के आपसी अंतर्विरोधों को हल करने और मजदूर वर्ग व मेहनतकश जनता की एकता को तोड़ने के लिए जनसंहार का आयोजन किया था।

सच्चाई इससे बिल्कुल विपरीत है। लोग अपने सिख भाइयों को मारने के लिए सड़कों पर उतर नहीं आए थे। बल्कि, हर जगह पर लोगों ने अपने सिख पड़ोसियों की रक्षा करने की पूरी कोशिश की थी।

के अधिकारियों सहित प्रमुख व्यक्तियों, सांसदों, लेखकों और पत्रकारों ने बार-बार तत्कालीन गृहमंत्री से जनसंहार को रोकने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया था, लेकिन उनके आग्रहों का जवाब खामोशी से दिया गया। कोई कार्रवाही नहीं की

शेष पृष्ठ 3 पर

हिन्दोस्तानी अर्थव्यवस्था की स्थिति

महज चार सप्ताह पहले, सितंबर के पहले सप्ताह में सरकार, कॉरपोरेट जगत और मीडिया में इस बात का ख़ास उत्साह था कि हिन्दोस्तान ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। इस ख़बर ने इस बात पर चर्चा को जन्म दिया कि हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था पिछले कुछ वर्षों में कैसे बढ़ी है।

निजी पूंजीवादी घरानों के मुनाफ़ों का बढ़ना, अत्याधिक टैक्स की वसूली होना, निर्यातों में बढ़ोतरी तथा कारों, रियल एस्टेट और विदेशों में छुट्टियां मनाने पर अधिक पैसा खर्च किया जाना, इन सबको अर्थव्यवस्था के विकास को मापने का तरीका बताया जा रहा है।

लेकिन अर्थव्यवस्था के तेज़ी से विकास की यह छवि, जो अपने आकार के मामले में दुनिया में पांचवें स्थान पर है। यह करोड़ों हिन्दोस्तानियों की वास्तविकता को नहीं दर्शाती है। अधिकांश लोगों के जीवन के स्तर में लगातार गिरावट हो रही है।

बेरोजगारी बढ़ रही है, नौकरियों और आजीविका की असुरक्षा बढ़ रही है। कामकाजी लोगों को भोजन, स्वास्थ्य देखभाल और परिवार के लिए आवश्यक

अन्य चीजों में कटौती करने के लिये मजबूर किया जा रहा है। भारी संख्या में लोग, भूख और कुपोषण से जूझ रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में किसानों पर बढ़ते कर्जों के कारण, आत्महत्या करने वाले किसानों की संख्या बढ़ रही है। इस देश की विशाल आबादी के बहुसंख्य लोगों की ये परिस्थितियां, अर्थव्यवस्था के

है, फिर भी मेहनतकश लोगों के एक बड़े हिस्से द्वारा इतने अधिक आर्थिक संकट का अनुभव किया जा रहा है? इसका उत्तर यह है कि अर्थव्यवस्था सबसे बड़े इजारेदार पूंजीपतियों के आकार और मुनाफ़े में तेज़ी से विकास करने में सक्षम बनाने की दिशा में उन्मुख है। अर्थव्यवस्था अधिकांश कामकाजी लोगों की सबसे

यह कैसे संभव है कि हिन्दोस्तानी अर्थव्यवस्था बढ़ रही है, फिर भी मेहनतकश लोगों के एक बड़े हिस्से द्वारा इतने अधिक आर्थिक संकट का अनुभव किया जा रहा है? इसका उत्तर यह है कि अर्थव्यवस्था सबसे बड़े इजारेदार पूंजीपतियों के आकार और मुनाफ़े में तेज़ी से विकास करने में सक्षम बनाने की दिशा में उन्मुख है। अर्थव्यवस्था अधिकांश कामकाजी लोगों की सबसे बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने या उनके जीवन स्तर में सुधार करने की दिशा में उन्मुख नहीं है।

विकास के बारे में बताई जा रही इस कहानी के पीछे की कड़वी सच्चाई को उजागर करती हैं।

अर्थव्यवस्था के विकास और देशभर में बहुसंख्य लोगों की परिस्थितियों के बीच कोई संबंध नहीं है। यह कैसे संभव है कि हिन्दोस्तानी अर्थव्यवस्था बढ़ रही

बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने या उनके जीवन स्तर में सुधार करने की दिशा में उन्मुख नहीं है।

सबसे बड़े इजारेदार पूंजीपतियों का विस्तार हो रहा है, वे और भी बड़े होते जा रहे हैं, क्योंकि वे अन्य कंपनियों को ख़रीदते हैं और विदेशों में अपने संचालन

का विस्तार करते हैं। हिन्दोस्तान के कई इजारेदार पूंजीवादी घराने आज दुनिया के सबसे अमीरों में गिने जा रहे हैं।

दूसरी ओर, लाखों लोगों की नौकरियां चली गई हैं या उन्हें कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। साथ ही साथ, मजदूरों के वेतन की बढ़ोतरी में ठहराव आ गया है या वेतन कम हो गये हैं। खाद्य पदार्थों, ईंधन और अन्य आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ती महंगाई के साथ, अधिकांश कामकाजी लोगों की कुल आमदनी और उनकी क्रय शक्ति तेज़ी से घटती जा रही है।

हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था का हालिया अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि जिस विकास की बात की जा रही है वह बहुत ही एकतरफा है। चार पहिया

शेष पृष्ठ 4 पर

अंदर पढ़ें

- कृषि संकट और उसका समाधान विषय पर तीसरी मीटिंग 2
- पाठकों की प्रतिक्रिया 4
- यूरोप में बढ़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन 5



पाठकों की प्रतिक्रिया

हिन्दोस्तान की विकास गाथा का जनसमूह से कोई वास्ता नहीं है

संपादक, मजदूर एकता लहर श्रीमान,

मैं 15 अक्टूबर की मीडिया रिपोर्ट का उल्लेख करना चाहती हूं, कि हिन्दोस्तान 121 देशों के वैश्विक भूख सूचकांक (ग्लोबल हंगर इंडेक्स या जी.एच.आई.) 2022 में 107 वें स्थान पर है। इसका स्थान पड़ोसी देशों – पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल और बांग्लादेश से भी नीचे है। दक्षिण एशियाई देशों में केवल अफगानिस्तान ही है जिसका स्थान हमसे नीचे है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हिन्दोस्तान 2021 के बाद से छः स्थान नीचे चला गया है। हिन्दोस्तान में अत्याधिक कुपोषण के कारण बच्चों जीवन की बर्बादी की दर दुनिया में सबसे ऊंची है। जी.एच.आई. के 29.1 अंकों के साथ, हिन्दोस्तान में भूख के स्तर को “गंभीर” बताया गया है।

केंद्र सरकार ने इस रिपोर्ट को तुरंत खारिज कर दिया है। सरकार ने रिपोर्ट की विश्वसनीयता पर सवाल उठाया है और

कृषि के संकट पर आयोजित जूम मीटिंग

संपादक महोदय,

मैंने मजदूर एकता लहर में जूम मीटिंग की रिपोर्ट को पढ़ा, जिसका विषय था ‘कृषि का संकट और उसका समाधान’। इस जूम मीटिंग में किसान संगठनों के नेताओं, मजदूर यूनियनों के नेताओं तथा समाज के अन्य शुभचिन्तकों ने अपने विचार दिये।

सभी लोगों के विचार को मैंने पढ़ा, इससे समझ में आता है कि सभी मेहनतकश लोगों की समस्याएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। चाहे वह किसानों की समस्या हो या फिर मजदूरों की। मीटिंग में पेश किये गये विचार देश में चल रहे आंदोलनों और संघर्षरत लोगों को, लोगों की समस्याओं का समाधान निकालने की दिशा में बढ़ने के लिये प्रेरित करते हैं। इसीलिये मैं समझता हूं कि ऐसी मीटिंगों की रिपोर्ट आपके पेपर में शामिल करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपके माध्यम से मैं मजदूर एकता कमेटी की तारीफ करना चाहूंगा कि उन्होंने इस तरह की खुली मीटिंग आयोजित करने में पहल की और स्वस्थ विचार–विमर्श करने का एक मंच उपलब्ध कराया। अगर ऐसी जूम मीटिंगें लगातार चलायी जायें तो वे मजदूरों और किसानों को एक दूसर की समस्याओं को समझने में सहायक हो सकती हैं।

इसे देश की छवि को खराब करने की अंतर्राष्ट्रीय साजिश का हिस्सा बताया है। इस साल सितंबर में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि हिन्दोस्तान ब्रिटेन को पछाड़कर सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) के मामले में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। उस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था दुनिया की सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ेगी।

आई.एम.एफ. की रिपोर्ट को सरकार, मीडिया और कॉरपोरेट घरानों द्वारा बड़े धर्षोल्लास के साथ व्यापक रूप से प्रचारित किया गया था। यह रिपोर्ट हिन्दोस्तान के “5 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था” बनने की दिशा में सरकार के बहुप्रचारित सपने के साथ फिट बैठती है।

सरकार ने विश्व बैंक और अन्य अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की रिपोर्टों में

संश्लेषण करने के बाद ही रिपोर्ट को जारी किया है।

हमारे देश के सरमायदार वर्ग और उसकी राजनीतिक पार्टियां मजदूरों और किसानों को बांट कर रखना चाहती हैं और सरमायदारों के मुनाफों को सुनिश्चित करना चाहती हैं। यह जूम मीटिंग एक माला की भांति सभी मेहनतकशों को एक धागे में पिरोकर एकजुट करने का काम कर रही है। कृषि का संकट सिर्फ किसानों का संकट नहीं है, यह पूरे देश का संकट है। अगर किसान अनाज का उत्पादन नहीं करेगा तो समाज ज़िन्दा नहीं रह सकता। किसान सिर्फ अन्न दाता ही नहीं है वह जीवन दाता भी है। कृषि के संकट का समाधान खोजना देश के मजदूरों, किसानों, शिक्षकों, डॉक्टरों, प्रोफेसरों, नौजवानों, महिलाओं और सभी लोगों की ज़िम्मेदारी है।

अंत में मैं मजदूर एकता कमेटी एक ऐसा मंच बना रही है जहां पर समाज के हर तबके से लोग आते हैं और कृषि के संकट का समाधान को खोजने का प्रयास कर रहे हैं। यह प्रयास जारी रहा तो हम कृषि को पूंजीपति वर्ग के चंगुल से ज़रूर बचा सकते हैं और पूरे समाज को भोजन मुहैया करवा सकते हैं।

धन्यवाद सोहन सिंह, दिल्ली

कम्युनिस्ट गृदर पार्टी का प्रकाशन
भारतीय रेल के निजीकरण को एकजुट होकर हराएं
यह पुस्तिका कम्युनिस्ट गृदर पार्टी के महासचिव, कामरेड लाल सिंह द्वारा 13 मई, 2018 को दिल्ली में पार्टी की एक सभा में प्रस्तुत की गई थी।

4 मजदूर एकता लहर, ग्रंथ–36, अंक – 21

नवंबर 1–15, 2022

दिये इस तथ्य को उजागर नहीं किया कि हिन्दोस्तान दुनिया की शीर्ष 25 अर्थव्यवस्थाओं में प्रति व्यक्ति जी.डी.पी. के मामले में अंतिम स्थान पर है। मुद्दा यह है कि हिन्दोस्तान दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, क्योंकि हिन्दोस्तान की जनसंख्या चीन के अलावा अधिकांश देशों की जनसंख्या से कहीं अधिक है। यह देखते हुए कि हिन्दोस्तान में बड़ी संख्या में अरबपति हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रति व्यक्ति जी.डी.पी. बेहद कम है जो हिन्दोस्तान में मौजूद व्यापक गरीबी को इंगित करता है।

सरकार और मीडिया जिस वृद्धि का जश्न मना रहे हैं, वह सबसे बड़े हिन्दोस्तानी इजारेदार पूंजीवादी घरानों के मुनाफे में वृद्धि है, जिनमें से कुछ आज दुनिया के सबसे अमीर लोगों में गिने जाने लगे हैं। इनकी अमीरी टपक कर जनसमूह के लिए विकास करने में असफल है।

इसके विपरीत, इजारेदार पूंजीवादी घरानों की दौलत की वृद्धि, जिसका जश्न मनाया जा रहा है, जनसमूह को नीचे धकेलने के कारण है। पूंजीवादी घरानों का विकास जनता के तीव्र शोषण व दरिद्रता तथा उनके अधिकारों को कुचलने पर आधारित है।

श्रीलता भोपाल, मध्य प्रदेश

पृष्ठ 1 का शेष
वाहनों की बिक्री अधिक है, लेकिन दोपहिया वाहनों की बिक्री में गिरावट आई है, खाद्य पदार्थों की प्रति व्यक्ति खपत में कमी आई है और बेरोज़गारी लगातार बढ़ रही है।
इस वास्तविकता के बावजूद, सरकार पिछले वर्ष 2021–22 के लिए रिपोर्ट की गई विकास दर के बारे में शेखी बघारती

विकास के प्रचार के बावजूद सच्चाई यह है कि हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था एक और संकट की ओर बढ़ रही है। उपभोग के लिए वस्तुओं की मांग में बड़े पैमाने पर ठहराव आ गया है क्योंकि बहुसंख्य कामकाजी लोग बहुत अधिक गरीब हैं। न तो हिन्दोस्तानी और न ही विदेशी पूंजीपति अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। अर्थव्यवस्था को केवल निर्यात पर कायम नहीं रखा जा सकता, और तब तो बिल्कुल भी नहीं जब दुनियाभर के कई देशों में मंदी की स्थिति हो।

रही है। रिपोर्ट में यह बताया गया है कि पिछले वर्ष की तुलना में 2021–22 के दौरान अर्थव्यवस्था में 8.7 प्रतिशत का विस्तार हुआ है। लेकिन हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि पिछले वर्ष कोविड–19 महामारी के कारण यह वृद्धि बहुत कम आधार पर थी। जीडीपी के लिहाज से तीन साल पहले की तुलना में अर्थव्यवस्था महज 3.8 फीसदी ज्यादा है।

सरकार चालू वित्त वर्ष के लिए ऊंची विकास दर का अनुमान लगा रही है, लेकिन वर्ष की शुरुआत में बजट के बाद से हर 2–3 महीने में इसे नीचे की ओर संशोधित करना पड़ा है। जून 2022 में सरकार ने जनवरी 2022 की 9 प्रतिशत से अधिक की अतिशयोक्तिपूर्ण ऊंची दर को केवल 7 प्रतिशत से अधिक की दर में कम कर दिया था। नवीनतम अनुमानों ने एक बार फिर से विकास की संभावनाओं को कम कर दिया है। भारतीय रिजर्व बैंक ने अपने विकास के अनुमान को 7.2 प्रतिशत के पहले के

इतनी व्यापक भूख, कुपोषण और गरीबी क्यों है। जबकि सरकार और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां हिन्दोस्तानी अर्थव्यवस्था के विकास के बारे में डींगें मारने से नहीं थकती हैं, लोगों की यह स्थिति साल–दर–साल बदतर होती जा रही है।

सरकार और मीडिया जिस वृद्धि का जश्न मना रहे हैं, वह सबसे बड़े हिन्दोस्तानी इजारेदार पूंजीवादी घरानों के मुनाफे में वृद्धि है, जिनमें से कुछ आज दुनिया के सबसे अमीर लोगों में गिने जाने लगे हैं। इनकी अमीरी टपक कर जनसमूह के लिए विकास करने में असफल है।

इसके विपरीत, इजारेदार पूंजीवादी घरानों की दौलत की वृद्धि, जिसका जश्न मनाया जा रहा है, जनसमूह को नीचे धकेलने के कारण है। पूंजीवादी घरानों का विकास जनता के तीव्र शोषण व दरिद्रता तथा उनके अधिकारों को कुचलने पर आधारित है।

श्रीलता भोपाल, मध्य प्रदेश

पृष्ठ 1 का शेष
अनुमान से घटाकर 7 प्रतिशत कर दिया है, जबकि व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन ने अनुमान लगाया है कि हिन्दोस्तान की आर्थिक वृद्धि घटकर 5.7 प्रतिशत रह जाएगी।
ठीक एक सप्ताह पहले, 1 अक्टूबर, 2022 को वित्त मंत्री ने दावा किया कि हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था को दुनियाभर में एक “प्यारी जगह” के रूप में देखा जाता है! हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था के विकास

विकास के प्रचार के बावजूद सच्चाई यह है कि हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था एक और संकट की ओर बढ़ रही है। उपभोग के लिए वस्तुओं की मांग में बड़े पैमाने पर ठहराव आ गया है क्योंकि बहुसंख्य कामकाजी लोग बहुत अधिक गरीब हैं। न तो हिन्दोस्तानी और न ही विदेशी पूंजीपति अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। अर्थव्यवस्था को केवल निर्यात पर कायम नहीं रखा जा सकता, और तब तो बिल्कुल भी नहीं जब दुनियाभर के कई देशों में मंदी की स्थिति हो।

के बारे में प्रचार और सभी प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं के लिए हिन्दोस्तानी बाज़ार के विशाल आकार का उपयोग हिन्दोस्तान को दुनिया के पूंजीपतियों के लिए “अच्छे निवेश गंतव्य” के रूप में बढ़ावा देने के लिए किया जाता है।

विकास के प्रचार के बावजूद सच्चाई यह है कि हिन्दोस्तान की अर्थव्यवस्था एक और संकट की ओर बढ़ रही है। उपभोग के लिए वस्तुओं की मांग में बड़े पैमाने पर ठहराव आ गया है क्योंकि बहुसंख्य कामकाजी लोग बहुत अधिक गरीब हैं। न तो हिन्दोस्तानी और न ही विदेशी पूंजीपति अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। अर्थव्यवस्था को केवल निर्यात पर कायम नहीं रखा जा सकता, और तब तो बिल्कुल भी नहीं जब दुनियाभर के कई देशों में मंदी की स्थिति हो।

दुनिया भर में पूंजीवाद गंभीर संकट में है और हिन्दोस्तान भी इससे अछूता नहीं है। http://hindi.cgpi.org/22667

यूरोप में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन

आर्थिक संकट और अपनी रोजी–रोटी पर बढ़ते हमलों के खिलाफ पूरे यूरोप में मजदूर बड़ी संख्या में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। मेहनतकशों के जीवन को नरक बना रही ऊर्जा की कीमतों में भारी वृद्धि के विरोध में ये प्रदर्शन हो रहे हैं।

पूरे यूरोप में मजदूर उस युद्ध का विरोध कर रहे हैं, जिसे नाटो अमरीका के नेतृत्व में यूक्रेन की रक्षा के नाम पर रूस के खिलाफ लड़ रहा है। अमरीका के दबाव में आकर यूरोपीय

फ्रांस के मजदूरों ने अधिक वेतन की मांग को लेकर प्रदर्शन किया
सूचना है कि विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों के लगभग 1,00,000 मजदूरों ने 18 अक्टूबर को पूरे फ्रांस के कई शहरों में लड़ाकू विरोध प्रदर्शन किए हैं। सिर्फ राजधानी पेरिस में हुये विरोध जुलूस में 70,000 से अधिक मजदूरों के शामिल होने की सूचना है।
तेल रिफाइनरियों के मजदूरों ने कई हफ्तों तक काम को छोड़कर विरोध प्रकट किया, और उसके बाद उच्च वेतन के लिए मजदूर यूनियनों की देशव्यापी हड़ताल का प्रतिनिधित्व किया। परिवहन मजदूर शिक्षक, खाद्य उद्योग के मजदूर, सार्वजनिक अस्पतालों के मजदूर, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के मजदूर और कई अन्य उद्योगों और सेवाओं के मजदूर हड़ताल में शामिल हुए।
फ्रांस में मुद्रास्फ़ीति की दर 6.2 प्रतिशत हो गई है, कई दशकों में हुई बढ़ोतरी में सबसे अधिक है। इसलिए हड़ताली मजदूर जीवनयापन के लिये होने वाले बढ़ते खर्च



पूरे ब्रिटेन में फिर से बढ़ती महंगाई और बेरोज़गारी के विरोध में संघर्ष

ब्रिटेन के मजदूर अपनी आजीविका और अधिकारों पर पूंजीपतियों द्वारा किए जा रहे चौरतफा हमलों के विरोध में पूरे देश में हड़ताल संघर्ष के लिये आगे आ रहे हैं। “बस अब बहुत हो गया!” के नारे के तहत बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं।

सार्वजनिक संपत्ति और सेवाओं के निजीकरण, जीवन यापन करने के लिये बढ़ते खर्च, मुद्रास्फ़ीति और ऊर्जा की बढ़ती कीमतों के विरोध में मजदूर अपनी



इटली
इटली से भारी विरोध प्रदर्शन की खबर है। लोग अपने बिजली के बिलों का भुगतान करने से इनकार कर रहे हैं, जो

यूरोप में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन

संघ के देश रूस पर कड़े प्रतिबंध लगाकर, उसकी अर्थव्यवस्था को कमजोर करने वालों की कतार में अमरीका के साथ शामिल हो गए हैं। गैस खरीदना बंद करना, इन प्रतिबंधों का एक हिस्सा है। रूस पर लगे प्रतिबंधों के परिणामस्वरूप गैस की कीमतों में भारी वृद्धि ने यूरोपीय संघ के देशों की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचाया है। अपना विरोध प्रकट करने के लिए मेहनतकश जनता सड़कों पर उतर रही है। सितंबर से ये विरोध प्रदर्शन तेज़ हो रहे हैं।



जीवन यापन की सेवाओं में कटौती करने और जीवन स्तर में गिरावट को दूर करने में सरकार की नाकामयाबी का विरोध करने के लिए 8 अक्टूबर को प्राग के वेन्सलास स्क्वायर पर हजारों लोग इकट्ठा हुए। विरोध प्रदर्शनों का आयोजन चेक कन्फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियंस द्वारा किया गया था। उन्होंने सरकार से खाद्य कीमतों, बुनियादी वस्तुओं, बिजली और गैस पर

नियम लागू करने और न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने की मांग की। इससे पहले 3 सितंबर को प्राग में 70,000 से अधिक लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने मांग की कि उनका देश नाटो और यूरोपीय संघ से बाहर हो जाए और अन्य देशों की बजाय, ऊर्जा की कीमतों को कम करने के लिए प्राकृतिक गैस सीधे रूस से खरीदे।



जर्मनी में मजदूरों ने युद्ध का और ऊर्जा की बढ़ती कीमतों का विरोध किया
ऊर्जा की बढ़ती कीमतों के विरोध में और यूक्रेन में चल रहे युद्ध के खिलाफ डसेलडोर्फ, बर्लिन, कोलोन और अन्य शहरों में विरोध प्रदर्शन हुए हैं। प्रदर्शनकारियों ने उर्जा के संकट के लिए रूस को दोषी ठहराने वाली जर्मन सरकार की निंदा की है। इस समय जर्मन सरकार नॉर्ड स्ट्रीम–2 प्राकृतिक गैस की पाइपलाइन को प्रमाणित करने और उसे लॉन्च करने से इनकार कर रही है। प्रदर्शनकारियों ने हथियारों की आपूर्ति करके युद्ध में भाग लेने और रूस पर अमरीका के नेतृत्व में लगाये जाने वाले प्रतिबंधों में भागीदारी करने के लिए अपनी सरकार की आलोचना की है। यूक्रेन को हथियारों का निर्यात करने पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर कासेल में विरोध प्रदर्शन हुए। विरोध प्रदर्शन करने वाले मजदूरों ने हथियार बनाने वाले कारखाने, राइनमेटॉल और टैंक बनाने वाले कारखाने क्रॉस–मार्फेई वेगमैन के प्रवेश द्वार को बंद कर दिया और युद्ध से भारी मुनाफ़ा बनाने के लिये इनकी निंदा की। कई विरोध कार्यवाइयों ने इस तथ्य को स्पष्ट कर दिया है कि जर्मनी के लोग अर्थव्यवस्था के बढ़ते सैन्यीकरण से बेहद चिंतित हैं। वे मांग कर रहे हैं कि जर्मनी को नाटो को भंग करने के लिए आगे आना चाहिए तथा चीन और रूस के युद्ध के खतरों को रोकना चाहिये। http://hindi.cgpi.org/22686

4 मजदूर एकता लहर, ग्रंथ–36, अंक – 21

नवंबर 1–15, 2022

5

To

स्वामी लोक आवाज़ पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक मधुसूदन कस्तूरी की तरफ से, ई-392 संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस-2, नई दिल्ली 110020, से प्रकाशित। शुभम इंटरप्राइजेज, 260 प्रकाश मोहल्ला, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली 110065 से मुद्रित। संपादक—मधुसूदन कस्तूरी, ई-392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस-2, नई दिल्ली 110020 email : melpaper@yahoo.com, mazdoorektalehar@gmail.com, Mob. 9810167911



WhatsApp
9868811998

अवितरित होने पर इस पते पर वापस भेजें :
ई-392, संजय कालोनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र फेस-2, नई दिल्ली 110020

निजीकरण के खिलाफ पुदुचेरी के बिजली मज़दूरों का संघर्ष

पुदुचेरी के बिजली विभाग के मज़दूरों ने निजीकरण के खिलाफ अपनी लड़ाई में कुछ समय के लिये सफलता हासिल की है। केंद्र शासित प्रदेश के बिजली मंत्री से उन्हें आश्वासन मिला है कि फिलहाल बिजली वितरण के निजीकरण की प्रक्रिया को आगे नहीं बढ़ाया जाएगा।

पुदुचेरी में बिजली का वितरण और बिजली की खुदरा आपूर्ति का 100 प्रतिशत निजीकरण करने का प्रस्ताव सरकार द्वारा जारी किये जाने के एक दिन बाद ही विभाग के हजारों कर्मचारी 28 सितंबर, 2022 को हड़ताल पर चले गए। कार्यकर्ताओं ने तुरंत धरना शुरू कर दिया और पुलिस की भारी मौजूदगी के बावजूद 6 दिनों तक इस धरना को जारी रखा। आखिर में, उनकी इस लड़ाई ने मुख्यमंत्री और बिजली मंत्री को उनसे बातचीत करने के लिए मजबूर कर दिया। उन्हें आश्वासन दिया गया कि निजीकरण की इस कार्यवाही पर पुनर्विचार किया जाएगा।

जून 2022 में जब पहली बार निजीकरण का प्रस्ताव रखा गया था, उस



समय भी विभाग के मज़दूरों ने निजीकरण के इस कदम के खिलाफ अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू कर दी थी। मज़दूरों को हड़ताल वापस लेने के लिए कहते हुए, मुख्यमंत्री ने मज़दूरों को आश्वासन दिया था कि बिजली वितरण नेटवर्क को निजी कंपनी को सौंपने की कोई सहमति देने से पहले वे इन मज़दूरों से परामर्श करेंगे।

सितंबर 2022 में निलामी के लिये बोलियां लगाने से पहले मज़दूरों से कोई परामर्श नहीं किया गया।

बातचीत के दौरान मज़दूरों ने अपनी दलीलें रखीं कि केंद्र शासित प्रदेश में बिजली आपूर्ति के निजीकरण का कोई आधार नहीं है। उन्होंने बताया कि पुदुचेरी का बिजली टैरिफ देशभर

में लगभग सबसे कम है, उपभोक्ता भी संतुष्ट हैं और पुदुचेरी के बिजली विभाग को लाभ भी हो रहा है। उन्होंने तर्क दिया कि यह केंद्र शासित प्रदेश के हित में नहीं है कि विभाग की संपत्ति को सचमुच में एक निजी कंपनी को उपहार में दे दिया जाये, जैसा कि चंडीगढ़ में किया गया था। इसके अलावा, उन्होंने निजीकरण की वैधता पर सवाल उठाया, जबकि बिजली (संशोधन) विधेयक 2022 पर स्थायी समिति की रिपोर्ट तक नहीं आई है। यह याद किया जा सकता है कि इस विधेयक को 8 अगस्त को संसद में पेश किया गया था और इसे बिजली मामलों की स्थायी समिति को भेज दिया गया था।

इस बातचीत और मंत्री की घोषणा के बाद, पुदुचेरी इलैक्ट्रिसिटी वर्कर्स एक्शन कमेटी ने हड़ताल को अभी के लिए वापस लेने का फैसला किया है। एक्शन कमेटी आंदोलन को आगे ले जाने की आवश्यकता की समीक्षा करेगी।

<http://hindi.cgpi.org/22673>

दिल्ली नगर निगम के सफ़ाई मज़दूरों का संघर्ष

दिल्ली के सफ़ाई मज़दूरों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर 14 अक्टूबर से हड़ताल शुरू की थी। यह हड़ताल 'एमसीडी समस्त यूनियन कोर कमेटी' के बैनर तले आयोजित की गई थी। इस कोर कमेटी में दिल्ली के सफ़ाई मज़दूरों की 8 यूनियनें शामिल हैं।

सफ़ाई मज़दूरों ने हड़ताल के दौरान झाड़ू लगाने और कूड़ा उठाने, जैसे मुख्य कामों और कई अन्य कामों को रोक दिया। दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों ने मजबूर होकर दो दिन के बाद ही मज़दूरों की मांगों को लेकर चर्चा करने के लिये उनके प्रतिनिधियों को बुला लिया। कुछ मांगों को पूरा करने के अधिकारियों के आश्वासन के बाद, मज़दूरों ने तत्कालीन तौर पर हड़ताल समाप्त कर दी। उन्होंने फैसला किया है कि संपूर्ण मांगों के पूरा होने तक वे अपना संघर्ष जारी रखेंगे।

संघर्ष कर रहे सफ़ाई मज़दूरों ने मज़दूर एकता लहर को बताया कि दिल्ली नगर निगम में 15,000 से अधिक सफ़ाई मज़दूर 20 से भी अधिक सालों से दिहाड़ी मज़दूर की तरह काम कर रहे हैं। वे वर्षों से पक्की नौकरियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।



सफ़ाई कर्मचारियों को पिछले तीन सालों से दिवाली बोनस नहीं मिला है, पिछले पांच सालों से वर्दी नहीं मिली है, निगम की ओर से सुरक्षा उपकरण जैसे कि मास्क, दस्ताने, हेलमेट, आदि भी लंबे समय से मुहैया नहीं कराये गये हैं।

दिहाड़ी पर काम करने वाले अस्थाई मज़दूरों को निगम की तरफ से सामाजिक सुरक्षा या स्वास्थ्य सेवा की सुविधा नहीं दी जाती है। इन मज़दूरों को निगम द्वारा बहुत कम वेतन, मात्र 16,080 रुपये प्रति माह,

पर रखा जाता है। दुर्घटना होने पर किसी भी प्रकार का मुआवज़ा उन्हें नहीं मिलता है। मृत्यु के बाद उनके परिवार के किसी सदस्य को अनुकंपा नौकरी, पेंशन आदि सुविधायें प्राप्त नहीं होतीं।

निगम में सफ़ाई मज़दूरों की भारी कमी है। झाड़ू लगाने वाले मज़दूरों के लिये उनके काम के क्षेत्र को बढ़ा दिया गया है। सफ़ाई मज़दूरों की कमी के कारण, मौजूदा मज़दूरों पर काम का बोझ अत्याधिक बढ़ जाता है। इस कमी के

कारण सफ़ाई का काम भी प्रभावित होता है। सफ़ाई मज़दूरों को छुट्टी के दिनों पर भी जबरन काम पर बुलाया जाता है और उसके बदले किसी प्रकार का भत्ता भी नहीं दिया जाता।

संघर्षरत सफ़ाई मज़दूरों ने दिहाड़ी मज़दूरों की नौकरियों को नियमित किये जाने और उन्हें सभी सुविधाएं दिये जाने, बोनस का फौरी भुगतान किये जाने, आदि की मांगें उठाई हैं। उनकी अन्य मांगों में शामिल है कि मज़दूरों की सभी पुरानी शिकायतों पर कार्यवाही की जाये तथा मृत मज़दूरों के आश्रितों को स्थाई नौकरी और लाभांश दिये जायें।

निगम के सफ़ाई मज़दूर काम की बदतर हालतों में सुधार और सुरक्षा की मांगों को लेकर लंबे समय से संघर्ष करते आ रहे हैं। उन्हें अधिकारियों ने बार-बार आश्वासन दिया है लेकिन उनकी मांगों की सुनवाई नहीं हुयी है।

उन्होंने घोषित किया है कि अगर निगम अधिकारियों ने दिए गए आश्वासनों को पूरा नहीं किया तो 26 अक्टूबर से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू की जायेगी।

<http://hindi.cgpi.org/22665>

मज़दूर एकता लहर के लेखों को सुनिये

चुनिंदा लेखों को सुनने के लिये
हिन्दी वेबसाइट

(www.hindi.cgpi.org) पर जायें
और डॉपडाऊन मेनू या साइडबार में
"लेखों को सुनें" पर क्लिक करें।

मज़दूर एकता लहर का वार्षिक शुल्क और अन्य प्रकाशनों का भुगतान आप बैंक खाते और पेटीएम में भेज सकते हैं

आप वार्षिक ग्राहकी शुल्क (150 रुपये) सीधे हमारे बैंक खाते में या पेटीएम क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें
और भेजने की सूचना नीचे दिये फोन या वाट्सएप पर अवश्य दें।

खाता नाम—लोक आवाज़ पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स बैंक ऑफ महाराष्ट्र, न्यू दिल्ली, कालका जी
खाता संख्या—20066800626, ब्रांच नं.—00974, IFSCCode: MAHB0000974, मो.—9810167911
वाट्सएप और पेटीएम नं.— 9868811998, email: mazdoorektalehar@gmail.com

